IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

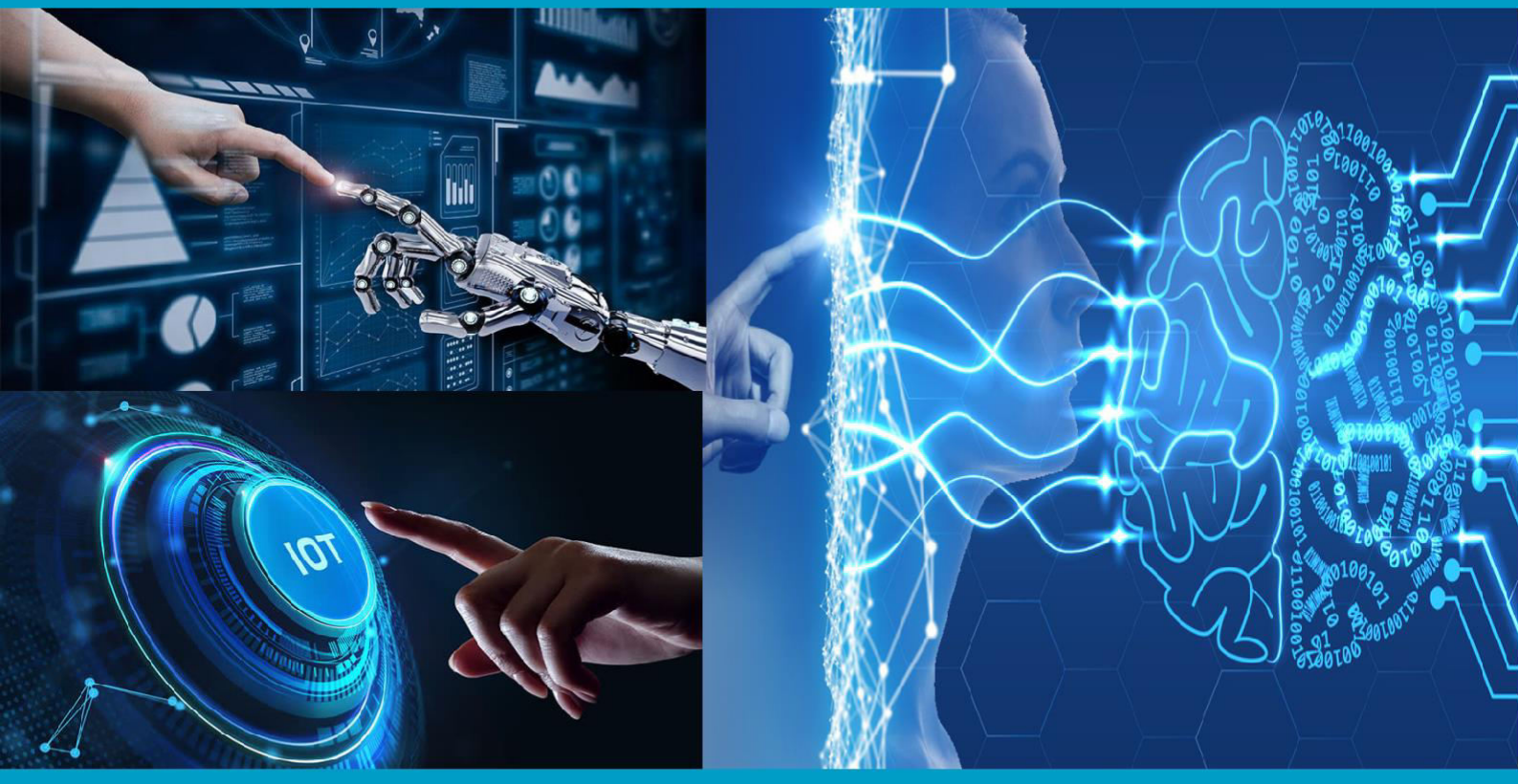

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 10, Issue 9, September 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.580

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 9, September 2023 |

वर्तमान समय में संगीत और उसके प्रचार-प्रसार के आयाम

Shachi Vyas

Assistant Professor, Department of Music (Vocal), Sister Nivedita Girls College, Bikaner, Rajasthan, India

सार: हम जिस दौर में जी रहे हैं, वो 21 वी सदी का आधुनिक दौर है। इस दौर में अलग-अलग तरह के फैशनों की भरमार है, जिसमें से एक है संगीत, संगीत के बिना हम सभी का जीवन अधूरा है। चाय की टपरी से लेकर बड़े-बड़े मॉल तक संगीत का बजना, बताता है कि संगीत हमारे लिए एक औषधि की तरह भी काम करता है।

भारतीय सिनेमा ने संगीत में हर दशक एवं अपने दौर में हमारे लिए कर्णप्रिय एवं मधुर संगीत, सदाबहार गीत दिए हैं, जिनमें से कुछ अपनी अलग भावों की प्रस्तुति एवं सुमुधर संगीत के कारण जैसे- " ये चाँद सा रोशन चेहरा " और चुम्मा-चुम्मा" सबके दिलों-दिमाग में हमेशा के लिए अमर हो गए।

I. परिचय

हमारे भारतीय संगीत की प्राचीन परंपरा

भारत में संगीत की परंपरा आदिकाल के समय से ही रही है। हिन्दुओं के लगभग सभी देवी और देवताओं के पास अपना एक अलग-अलग प्रकार के संगीत यंत्र देखने को मिलते हैं, उदाहरण के लिए विष्णु के पास शंख है, तो शिव के पास डमरू, नारद मुनि और सरस्वती के पास वीणा है, तो भगवान श्रीकृष्ण के पास बांसुरी। इसलिए संगीत को पवित्र भी माना जाता रहा है, परन्तु अब शास्त्रीय संगीत में पवित्रता की जगह रॉक म्यूजिक, रैप, हिपहॉप, जैज़ रोमांटिक, जैसे आदि संगीतों ने ले ली है।

संगीत को लोग सिर्फ मनोरजंन के लिए ही नहीं सुनते बल्कि संगीत से हमारा मन और मस्तिष्क पूरी तरह से शांत और स्वस्थ भी रहता है, इसलिए कभी-कभी लोग अपना मन शांत करने के लिए भी संगीत को सुनना पसंद करते हैं।

आधुनिक दौर में संगीत की परिभाषा

आज कल का 21 वी सदी का युवा जोशीले, रोमांचक संगीत-गीत सुनना पसंद करता है। अगर हम आपस में संगीत की बात करते हैं तो लोगों के जहन में ज्यादातर रोमांटिक गीत आते हैं, क्योंकि चाहे हिन्दी भाषा या फिर पंजाबी भाषा या किसी अन्य भाषा के के गीत हों, हम सभी भाषाओं में हमेशा रोमांटिक गानों की संख्या दूसरे गानों के मुताबिक ज्यादा पाते हैं। जिस से हम संगीत को प्रेम बांटने या फिर प्रेम को दर्शाने का एक माध्यम भी मान सकते हैं।[1,2,3]

अगर हम संगीत के बदलते स्वरुप पर अपनी एक नज़र डालें तो हम देखते हैं कि आजकल के अधिकतर संगीत प्रेम, टूटे-दिल तथा दुख पर बनाए जाने लगे हैं। 90 के दशक के गीतों में भक्ति,आराधना, प्रेम आदि देखने को मिलता था। पहले के गीतों एवं संगीतों का अतंराल ज्यादा लम्बा होता था, परन्तु वर्तमान सिनेमा के गानों में बोल जल्दी ही शुरु हो जाते हैं क्योंकि आज का युवा गानों में ट्यून से ज्यादा शब्दों पर ध्यान देता है जिसे " लिरिक्स " कहते हैं।

संगीत का दौर इतनी तेज़ी से बदल रहा है कि संगीत में इस्तेमाल होने वाले यंत्र जैसे तबला, बाँसुरी, ढोलक, चिमटा आदि के बजाय लोग अब गिटार और पियानो ले रहे हैं। अब लोगों को "किशोर कुमार" के शांत गानों की बजाय यो यो हनी सिंह ,बादशाह, मिका सिंह के रैप पसंद आते हैं।

आज के बदलते संगीत के दौर में सिर्फ इतना ही नही कि संगीत के सिर्फ गायक बदल रहे हैं, संगीत को गाने- दर्शाने का ढंग भी बदल रहा है, जैसे- पहले गायक सिर्फ गाने-गाते थे और पर्दे के पीछे रहते थे, लेकिन अब समय बदलने के साथ पर्दे के पीछे रहने वाले गायकों को लोग स्क्रीन पर थिरकते हुए देखना पसंद करते हैं।

पुराने दौर के संगीत की सौंधी महक

पहले के संगीत शादी के समारोहों एवं पारिवारिक दृश्यों को ध्यान में रखकर बनाए जाते थे। जिससे भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की एक अलग विशेष झलक देखने को मिलती थी। 'दीदी तेरा देवर दीवाना', 'मेहंदी सजाकर रखना', और 'छोटे-छोटे भाइयों के बड़े भैया' जैसे गीतों में भारतीय संस्कृति का अद्भुत संगम दिखाई पड़ता था। लेकिन, कहा जाता है कि समय के साथ परिवर्तन होना

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 9, September 2023 |

प्रकृति का नियम है। आज बेशक भले विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में कितना भी विकास हुआ हो, लेकिन हमने अपने संगीतों में वो झलक खो दी है जो कि हमारी प्राचीन पौराणिक संस्कृति को दर्शाती थी।

आजकल के गायक-गायिकाओं ने अपना और संगीत का एक अलग अंदाज कायम किया है। यूरोपियन वाद्ययंत्रों को भारतीय वाद्ययंत्रों तबले, बांसुरी के साथ अनोखे सुर और ताल में बैठाने का प्रयास किया है। नये सुरों को नयी माला में पिरोया गया है। ऐसे गानों पर युवा थिरकना और अपनी कूल पार्टी में' पार्टी ऑल नाइट्' जैसे गानों में झूमना पसंद करते हैं।

हम जिस दौर में जी रहे हैं, वो आधुनिक दौर है। इस दौर में अलग-अलग तरह के फैशनों की भरमार है। जिसमें से एक है संगीत, बॉलीवुड को लीक से हटकर संगीत देने वाले अमित त्रिवेदी ने बताया कि गाने हिट हो जाने के बाद भले ही लोग उनकी वाहवाही करते हों लेकिन रिलीज से पहले निर्माता निर्देशकों को इस तरह के अलग-थलग संगीत के लिए राजी करना आसान नहीं होता। यह एक बेहद कठिन रास्ता है। उन्होंने यह भी कहा कि कुछ तो बदलते समाज के साथ संगीत बदलता है तो कुछ बदलते संगीत के साथ समाज की पसंद बदलती है, लेकिन सच्चा कलाकार वही करता है, जो उसका दिल कहता है।[4,5,6]

उनके अनुसार इस समय दुनिया भर के संगीत को सुनने तक हर किसी की पहुंच है, विज्ञान एवं नवीन तकनीक ने आसमान की ऊंचाइयां छू ली हैं और लोग प्रयोगों के लिए, कुछ नया सुनने के लिए हर घड़ी तैयार हैं। ऐसे में यह भारतीय फिल्म संगीत का सबसे रोचक दौर है।

जीवन का अभिन्न अंग संगीत
संगीत की जीवन में अपनी अलग भूमिका है, जिसका स्थान शायद ही कोई और ले सकता है। संगीत हमारे मन मस्तिष्क को आराम देने के लिए भी उपयोगी है।

आजकल के समय में जब किसी एक व्यक्ति के पास दूसरे व्यक्ति के लिए समय नहीं है तब ऐसे में संगीत ही है जो हमारे अकेलेपन को दूर करने में मदद करता है।

हर समारोह इस के बिना अधूरा सा महसूस होता है, इंसान के जन्म के अवसर से लेकर मृत्यु की शैया तक संगीत जुड़ा हुआ मिलता है।आज के सुरों और पुराने गानों के सुरों में जमीन-आसमान का अन्तर आया है, लेकिन आज भी लोग पहले की भांति गाने के बिना नहीं रह सकते। बेशक नए गाने आ गए हों, लेकिन पुराने गानों की जगह दिल में आज भी है और हमेशा रहेगी।

II. विचार-विमर्श

आधुनिक काल में संगीत 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में संगीत के कई ग्रन्थ लिखे गए । बंगाल के सर एस एम टैगोर ने ' The Universal History of Music ' नामक ग्रन्थ लिखा । इसी काल में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने बंगाल संगीत को एक नया रूप दिया , जिसे रवीन्द्र संगीत कहा गया । यह आज उत्तरी व दक्षिणी संगीत की तरह ही संगीत का एक भाग है ।

• इसी काल में एन ए विलर्ड ने ' A Treatise on the Music of Hindustan ' नामक पुस्तक लिखी । इन्हीं के अथक् प्रयासों से कई यूरोपियनों ने भारतीय संगीत का अध्ययन किया । इस समय घराना परम्परा का भी पूर्ण विकास हो चुका था । इसी समय में पण्डित विष्णु नारायण भातखण्डे हुए , जिन्होंने भारतीय संगीत को नई दिशा दी , आपने थाट राग वर्गीकरण पद्धति बनाई तथा एक नई स्वर लिपि पद्धति बनाई ।

• संगीत के दो ग्रन्थ श्री मल्लक्षय संगीत तथा अभिनव राग मंजरी लिखे । इसके अतिरिक्त क्रमिक पुस्तक मल्लिका भाग छः आदि पुस्तकें लिखीं । लखनऊ के मैरिस म्यूजिक कॉलेज , ग्वालियर में माधव संगीत विद्यालय , बड़ौदा में म्यूजिक कॉलेज खोले तथा संगीत को जनसाधारण में प्रचारित किया । आपका उपनाम चतुरंग , हररंग चतर आदि थे ।

• इसी काल में बालकृष्ण बुआ इंचलकरणी हुए । इन्होंने गायन के क्षेत्र में अपने अनेक शिष्य बनाए , जिन्होंने संगीत को बढ़ाया । इसी समय में इनके शिष्य पण्डित विष्णुदिगम्बर पलुस्कर हुए , इन्होंने संगीत के उत्थान में अनेक कार्य किए । सबसे पहले इन्होंने गीतों से अश्लील शब्दों को हटाकर भक्ति रस के शब्दों में डाला तथा लाहौर में 5 मई , 1901 को गन्धर्व महाविद्यालय की स्थापना की । इन्होंने अपने गीतों में देशभक्ति तथा राष्ट्रीय चेतना को प्रमुखता दी तथा स्वरलिपि पद्धति का निर्माण किया ।

- पण्डित विष्णुदिगम्बर पलुस्कर जी ने लगभग 250 पुस्तकें लिखीं , जिनमें से संगीत बालबोध , राग प्रवेश , भजनामृत लहरी , संगीत तत्त्व दर्शक आदि प्रमुख हैं । इनके शिष्यों में पण्डित ओंकारनाथ ठाकुर , पण्डित विनायक राव पटवर्धन आदि हैं ।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 9, September 2023 |

- 20 वीं शताब्दी में राजा भैया पूछवाले एक प्रसिद्ध गायक हुए हैं , इन्होंने संगीत के उत्थान में कई कार्य किए । इसी काल में प्रसिद्ध नृत्यकार उदयशंकर तथा रामगोपाल हुए दोनों ने नृत्य को नए – नए परिवर्तनों के साथ विकसित किया । भारतीय नृत्य देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी लोकप्रिय रहा ।[7,8,9]
- इसी समय में दक्षिणी भारत में सेमनगुड़ी श्रीनिवास अय्यर हुए । वे संगीत के सर्वोत्तम विशेषज्ञ माने जाते हैं । इन्होंने दक्षिणी संगीत को विकसित किया तथा उसकी आत्मिक पृष्ठभूमि को उत्कृष्ट बनाया ।
- इसी समय में उस्ताद अब्दुल करीम खाँ हुए । ये प्रसिद्ध गायक थे , इन्होंने आर्य समाज विद्यालय की स्थापना वर्ष 1913 में पूना में की । संगीत की लोकप्रियता अब जनसाधारण में बढ़ गई ।
- इसी काल में प्रसिद्ध सुरवहार वादक उस्ताद इनायत खाँ हुए , इन्होंने सितार वाद्य को प्रमुख रूप से अपनाकर उसे लोकप्रिय बनाया । नृत्य के क्षेत्र में श्रीमती इन्द्राणी रहमान (भरतनाट्यम) तथा कुमारी अनुराधा गुहा का कत्थक में सराहनीय योगदान रहा ।
- संगीत के उत्थान हेतु वर्ष 1954 में ललित कला अकादमी की स्थापना की गई । वर्ष 1952 से भारत सरकार श्रेष्ठ संगीतज्ञों को संगीत को प्रोत्साहन देने के लिये पद्म श्री , पद्म भूषण व पद्मविभूषण आदि उपाधियों व पुरस्कारों से सम्मानित कर रही है ।
- अनेक कलाकारों ने संगीत के विकास प्रचार एवं श्रेष्ठता की ओर ध्यान दिया है , जिनमें पण्डित ओंकारनाथ ठाकुर , पण्डित भीमसेन जोशी , कुमार गन्धर्व , पण्डित रविशंकर , उमा देवी , जाकिर हुसैन , डॉ . लालमणि , पण्डित शिवकुमार शर्मा , हरि प्रसाद चौरसिया , परवीन सुल्ताना , अमजद अली खान , विलायत खाँ , निखिल बनर्जी आदि अनेक कलाकारों ने स्वतन्त्रता के पश्चात् भी सं को उन्नत करने के प्रयास किए एवं अपनी संगीत कला की चारुता एवं उसकी अभिवृद्धि करके संगीत में अपना बहुमूल्य योगदान दिया ।
- उस्ताद विलायत खाँ सितार वादक रहे । आपने सितार वाद्य में नई – नई चीजों को डाला तथा उसे लोकप्रिय किया । ये सितार में गायिकी अंग का ये हो प्रतिनिधित्व करते हैं ।
- उस्ताद अली अकबर खाँ श्रेष्ठ सरोद वादक हैं । इसी समय में प्रसिद्ध शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिलाह खाँ हुए ।
- इसके अतिरिक्त वी जी लोग वायलिन वादक , उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ गायक , रुक्मिणी अरुणेलम नृत्य इत्यादि कलाकारों द्वारा संगीत का विकास निरन्तर सराहनीय रहा ।
- अन्ततः प्राचीनकाल से वर्तमान समय तक संगीत के विकास में समय – समय पर अनगिनत बाधाएँ उत्पन्न होती रहीं , परन्तु संगीत अपनी शक्ति सामर्थ्य के कारण कभी धीमी व कभी तीव्र गति से निरन्तर विकास के पथ पर अग्रसर रहा ।

आधुनिक काल में संगीत तीव्र गति से प्रगति कर रहा है । आज हजारों विद्यार्थी संगीत शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं । संगीत शिक्षकों को भी समाज में पूरा सम्मान मिलता है । संगीत के क्रियात्मक पक्ष व सैद्धान्तिक पक्ष पर अनेक ग्रन्थ लिखे गए हैं । इसके फलस्वरूप आज भारत में ही नहीं वरन् विश्व के कोने – कोने में संगीत का प्रचार – प्रसार है ।

III. परिणाम

संगीत सभी ललित कलाओं में सर्वोत्तम है। यह मानव मन की भावना की एक उत्कृष्ट कृति है। जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी अमूर्त भावनाओं को मूर्त रूप में प्रकट करता है। संगीत अखंड और शाश्वत है। संगीत हमारे समाज और संस्कृति का दर्पण है। इसलिए संगीत मानवता का स्रोत है और शाश्वत है। इसलिए संगीत विश्वकुटुम्बकम (पूरा विश्व एक परिवार है) की भावना विकसित करता है, जिससे सभ्य समाज का निर्माण होता है। संगीत की परिभाषा पं. शारंगदेव ने अपने ग्रंथ संगीत रत्नाकर में इस प्रकार उल्लेख किया है। संगीत सभी ललित कलाओं में श्रेष्ठ कला है। यह मानव मन की भावना की उत्कृष्ट कृति है। जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी अमूर्त भावनाओं को मूर्त रूप में प्रकट करता है। संगीत अखण्ड एवं अनंत है। संगीत आपके समाज व संस्कृति का दर्पण होता है।[10,11,12] इसलिए संगीत मानवतावाद का पोषक एवं अनंत है। इसलिए संगीत से विश्वकुटुम्बकम (पूरा विश्व एक परिवार) की भावना का विकास होता है जिससे संगीत समाज का निर्माण होता है। संगीत की परिभाषा पं. शारंगदेव ने अपने ग्रन्थ संगीत रत्नाकर में इस प्रकार कहा है "गीतं संगीतं तथा नृत्यं त्रयं संगीत मुच्यते।"

भारत में संगीत की भी समृद्ध परंपरा है। संगीत की इतनी पुरानी और समृद्ध परंपरा बहुत कम देशों में पाई जाती है। भारतीय संगीत में शिव और सरस्वती की प्रेरणा विद्यमान है, जिसका अर्थ है कि मनुष्य बिना किसी दैवी प्रेरणा के, केवल अपने बल पर ही ऐसी उच्च कला का विकास नहीं कर सकता। भारत में संगीत वैदिक काल से ही अस्तित्व में था। यजुर्वेद के 30वें काण्ड के 19वें और 20वें मंत्र में अनेक वाद्य वादकों का उल्लेख है। जिससे संगीत का अस्तित्व स्पष्ट होता है। भारतीय संगीत का इतिहास कम से कम 4000 वर्ष पुराना है। विश्व में सबसे प्राचीन संगीत का उल्लेख सामवेद में मिलता है, विभिन्न वाद्यों एवं स्वरों का कलात्मक वातावरण यहीं विकसित हुआ। पाइथागोरस गणित के नियमों द्वारा स्वरों का स्थान निर्धारित करने वाले यूरोप के पहले व्यक्ति बने। भारत में भी संगीत की समृद्ध परंपरा रही है। कुछ ही देशों में संगीत की इतनी पुरानी एवं समृद्ध परंपरा पाई गई है। भारतीय संगीत की प्रेरक शक्ति और सरस्वती इसकी विशेषता है कि मनुष्य इतनी उच्च कला को बिना किसी दैवी प्रेरणा के, केवल स्वयं के बल पर विकसित नहीं कर सकता। वैदिककाल से ही संगीत भारत में विद्यामान था। यजुर्वेद में 30वें कांड के 19वें और 20वें मंत्र में कई वाद्यों का उल्लेख है। इस संगीत का अस्तित्व स्पष्ट होता है। भारतीय संगीत का इतिहास कम से कम 4000 साल पुराना है। संसारभर में सबसे

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 9, September 2023 |

प्राचीन संगीत का उल्लेख सामवेद में मिलता है, यहाँ विभिन्न प्रकार के वाद्य यंत्रों और स्वरों के कलात्मक वातावरण का विकास हुआ है। यूरोप में पाइथागोरस पहला व्यक्ति हुआ है जिसने गणित के नियमों द्वारा स्वरों के स्थान को निर्धारित किया है।

भारत में संगीत युगों से सुना-गाया जाता रहा है, पर क्या मौजूदा गानों को असल संगीत माना जा सकता है? क्या अश्लीलता के विष में डूबे गानों के बोल और स्त्री के शरीर की बनावट को बाज की नजरों से देखते गीत के शब्द असल संगीत कहे जा सकते हैं? अगर नहीं, तो जो हम-आप रोज सुन रहे हैं, वह क्या है? और फिर वह संगीत कहां है जिसकी कभी कल्पना की गई थी? विश्व संगीत दिवस पर आइए इसी संबंध में युवा गजल गायक कुमार सत्यम से संगीत के इस बदलते रूप को समझने की कोशिश करते हैं।

अमर उजाला से बातचीत में कुमार सत्यम बताते हैं, संगीत, गायन वादन और नृत्य का ऐसा समावेश है जो कर्णप्रिय हो। असल संगीत वही है जिसे सुनने पर आत्मा का सीधे ईश्वर से संपर्क हो। सुर, ताल और लय संगीत के मूल आधार हैं। पहले के संगीत को देखें तो उनमें इन तीनों का मिला जुला रूप होता था, पर आज के समय में 'लय' प्रधान हो गया है। लय पर लोग नाच तो लेते हैं, भले ही सुर और शब्द न समझ पाएं।

ऐसा नहीं है कि यह बदलाव अचानक से आ गया है। यह काल दर काल चलती आ रही प्रक्रिया है। गायिकी की शुरुआत ध्रुपद संगीत से हुई, जो बाद में धमार और खयाल में बदलती गई। इसके बाद ठुमरी, दादरा, गजल और इस तरह से समय के साथ-साथ इसमें परिवर्तन आता गया। संगीत अब एक अलग ही दिशा में है, संभवत: इसलिए क्योंकि हम व्याकरण विहीन भाषा सीखने और समझने में लगे हुए हैं, यह जानते हुए भी कि व्याकरण के बिना असल भाषा के तहस-नहस होने का डर रहता है।

असल संगीत तो आत्मा का ईश्वर से मिलन कराने वाली है। जो मौजूदा दौर में गाया-सुना जा रहा है, जिसे लोग, विशेषकर युवा खूब पसंद कर रहे हैं, वह संगीत तो हो ही नहीं हो सकता है।
ईश्वर की आराधना का एक रूप है संगीत[13,14,15]

कुमार सत्यम बताते हैं, धुप्रद गायकी में सारे शब्द ईश्वर को समर्पित होते थे। उसकी बंदिशों में शब्द-ब-शब्द ईश्वर की आराधना होती थी।

'अधरन मुरलीधरन नटवर नागर, भस्म अंग गौरी संग जटा में बिराजे गंग'

समय के साथ संगीत में आए बदलाव और व्यापारीकरण ने गीतकारों से अच्छे शब्दों के प्रयोग की जैसे कला ही छीन ली हो। 'मुन्नी बदनाम' और 'लड़की ब्यूटीफुल कर गई चुल' सुनने वालों को असल संगीत और उसमें प्रयुक्त अलंकार युक्त करामाती शब्दों के इस्तेमाल के बारे में कैसे पता चल सकेगा? गलती एक तरफा नहीं है, आज के समय में तानसेन और कानसेन दोनों की कमी है।

ऐसा भी नहीं है कि लोग अच्छा गा और सुन नहीं रहे हैं, अच्छे संगीत के श्रोता और गायक भी हैं लेकिन दुर्भाग्य से थोड़े कम। हमें लोगों को असल संगीत का अमृत चखाना होगा, जिसके बाद उनको निम्न स्तर का कुछ सूझे ही न। संगीत की दुनिया में फैला अभद्रता और अश्लीलता का विष इसी अमृत से दूर किया जा सकता है।

गानों में अश्लीलता को लेकर कुमार सत्यम कहते हैं, यह मानव की प्रकृति रही है, उसे गलत चीजें ज्यादा आकर्षित करती हैं और तेजी से समझ आती हैं। जब मौजूदा संगीत में अश्लील और अशोभनीय शब्दों का प्रयोग शुरू हुआ तो लोगों को यह पसंद आया, वही... इंसानी फितरत। पर उस समय शायद हम यह ध्यान नहीं दे पाए कि हम संगीत के असल स्वाद से कोसों दूर होते जा रहे हैं। भोजपुरी से लेकर बॉलीवुड, गानों में अश्लीलता को घोला जा रहा है, लोगों को न जाने क्यों यह कड़वा विष मीठा लग रहा है? शायद पाश्चात्य सभ्यताओं को हम ज्यादा प्राथमिकता देने लगे हैं, इसलिए भी।

असल में इसे संगीत और इनके गाने वालों को गायक कहना भी उचित नहीं है। यह तो व्यापार है, गाने बनाने, लोगों को कुछ भी उल्टा-सीधा सुनाने और पैसे कमाने का। असल संगीत की महफिलें आज भी जमती हैं, जहां सादगी में भी बहार आता है।

हां, इस दौर में एक चीज़ जरूर सुकून देती है वह यह कि युवाओं का एक हिस्सा अब भी वास्तविक संगीत से जुड़ा हुआ है, उसे पसंद करता, समझता है, जिसके लिए 'आन मिलो सजना' ही प्राथमिकता है, 'ब्लू है पानी-पानी' नहीं। इसके अलावा माता-पिता बच्चों को संगीत सीखने के लिए प्ररित कर रहे है, संगीत वही सिखा सकता है जिसे आता होगा।

सौभाग्य से बच्चे अच्छा और वास्तविक संगीत सीख रहे हैं, ऐसे में आशा है भविष्य की पसंद भी वही संगीत होगी जिसकी पूर्वजों ने कल्पना की थी। ये जो दौर है, गानों में अभद्र शब्दों के प्रयोग का, जल्द बीतेगा। नए सुबह होगी, ज्यादा रोशन-ज्यादा चमकदार। जहां वास्तविक संगीत ही गाया और सुना जाएगा। विश्व संगीत दिवस पर हमें यही शपथ लेना है कि अच्छा सुनेंगे। क्योंकि आप अच्छा

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 9, September 2023 |

सुनेंगे तभी अच्छा सोचेंगे, और जब अच्छा सोचेंगे तभी बेहतर राष्ट्र की निर्माण होगा। ऐसा राष्ट्र जहां कर्णप्रिय संगीत चारो ओर सुनाई देगा।[16,17,18]

IV. निष्कर्ष

संगीत का क्षेत्र विस्तीर्ण क्षेत्र है। भारतीय परंपरा में तो यह जैसे रचा-बसा है। इसकी छाप भारतीय फ़िल्मों में देखी जा सकती है। वहाँ की कोई फ़िल्म बिना गाने के पूरी नहीं होती है। विदेशी फ़िल्मों की तरह प्रयास किए गए कि हिन्दी फ़िल्म बिना गानों की बनाए जाए पर ऐसा हो नहीं पाया। आज भी हमारी फ़िल्मों में शास्त्रीय संगीत की छाप मिलती है। यह परंपरा आज की नहीं है बल्कि वर्षों पुरानी है। वे इसमें विभिन्न प्रकार के प्रयोग करते हैं।[19] चित्रपट शास्त्रीय संगीत की गंभीरता के स्थान पर लय तथा चपलता को स्थान देते हैं। शास्त्रीय संगीत में ताल का परिष्कृत तथा शुद्ध रूप देखने को मिलता है। चित्रपट में ऐसा नहीं होता, वहाँ आधे तालों का ही प्रयोग किया जाता है। इस कारण इसे आम व्यक्ति भी थोड़े प्रयास से गा सकता है। आज फ़िल्मी संगीत में पॉप, शास्त्रीय संगीत, लोकगीतों का मिश्रण देखने को मिलता है। ये प्रयोग तेज़ी से हो रहे हैं और लोगों द्वारा सराहे भी जा रहे हैं।[20]

संदर्भ

1. ओईडी , § 1.
2. ^ एएचडी , § 1.
3. ^ एपर्सन 2022 , § पैरा. 1.
4. ↑ मॉर्ले 2013 , पृ. 5.
5. ^ मिथेन 2005 , पृ. 26-27.
6. ↑ गार्डनर 1983 , पृ. 104.
7. ^ [ए बी] होड, टीएफ, एड. (2003) [1996]. "संगीत" . द कॉन्साइस ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ऑफ इंग्लिश एटिमोलॉजी . आईएसबीएन 978-0-19-283098-2. मूल से 30 मई 2022 को संग्रहीत । 30 मई 2022 को लिया गया ।
8. ↑ नेटल 2001 , §III "3. कलाओं के बीच संगीत"।
9. ↑ ऑनलाइन व्युत्पत्ति शब्दकोश , § पैरा 2.
10. ↑ [ए बी सी] ऑनलाइन व्युत्पत्ति शब्दकोश , § पैरा 1.
11. ↑ [एपेल] 1969 , पृ · 548.
12. ^ एंडरसन और मैथिसन 2001 , § पैरा 1.
13. ^ मरे 2020 , पृ. 13-14.
14. ^ [ए बी सी डी] नेटल 2001 , §I "1. व्युत्पत्ति"।
15. ^ एंडरसन और मैथिसन 2001 , § पैरा 2.
16. ↑ नेटल 2001 , §II "1. समकालीन पश्चिमी संस्कृति"।
17. ↑ [ए बी] नेटल 2001 , §II "2. पूर्वी एशिया"।
18. ↑ [ए बी] नेटल 2001 , §II "5. कुछ अफ़्रीकी संस्कृतियाँ"।
19. ↑ नेटल 2001 , §II "4. भारत".
20. ↑ नेटल 2001 , §II "6. कुछ अमेरिंडियन और ओशियनियन संस्कृतियाँ"।

Impact Factor: 7.580

INTERNATIONAL JOURNAL
OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com